।। ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय नमः ।।

श्री विघ्न विनाशक तीर्थ
विराट नगर पार्श्वनाथ
परिचय, पूजन, आरती

प्रकाशक

श्री हरिद्धारी लाल जैन

अध्यक्ष

श्री दिगम्बर जैन समाज, विराट नगर, जयपुर (राज.)

मो. 9828950998

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन नशियाँ

विराट नगर, जयपुर – 303102 (राज.)

परिचय– यह गौरवपूर्ण नशियाँजी राजस्थान राज्य की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर से 85 किमी. उत्तर की ओर एवं तिजारा से अलवर होते हुए 110 कि.मी. पश्चिम की ओर राजमार्ग संख्या 13 पर स्थित ऐतिहासिक महाभारत कालीन विराट नगर (बैराठ) में स्थित है। अरावली पर्वत शृंखलाओं से घिरे इस नगर के उत्तरी पश्चिम भाग में 1 कि.मी. दूर 16वीं शताब्दी में निर्मित उक्त नशियाँ जिसमें स्थित बाग, बगीचे, फव्वारे, सिंचाई के लिए पक्के धोरे, तीन कुएं और विशाल परकोटा है जो प्राचीन राजसी वैभव का प्रतीक है।

साथ ही भारत की राजदानी दिल्ली में जैनागमानुसार भट्टारक गद्दी पर विराजमान धर्मगुरुओं के चरण चिह्न स्वरूप बनी विशाल छतरियाँ हैं। जिनमें लगे शिलालेखों के अनुसार परम पूज्य भट्टारक जगतकीर्ति जी, सदासुखदास जी, चेतनदास जी, ललितकीर्ति जी, गंगाराव जी, ऋषभदास जी, प्रभुदयाल जी के पद चिह्न विद्यमान हैं जो जैन आस्था के केन्द्र एवं गौरव का विषय है।

तीर्थ संरक्षिणी महासभा के तत्त्वावधान में श्री विघ्न विनाशक तीर्थ विराट नगर नशियाँ का जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न हुआ। साथ ही तीर्थ पर पार्श्वनाथ भगवान की 4 भव्य प्रतिमाएँ एवं चौबीस तीर्थंकर की प्रतिमाएँ तैयार कराई गईं जिनका पञ्चकल्याणक परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 26 जनवरी से 31 जनवरी, 2007 तक सम्पन्न हुआ। साथ ही आचार्यश्री की प्रेरणा से पञ्च पाण्डव की खड्गासन की प्रतिमाएँ भी स्थापित की गई जो विश्व के इतिहास में गौरव का स्थान बना।

सन् 2010 में पूज्य गणिनी आर्यिकाश्री स्याद्वादमति माताजी का पावन वर्षायोग सम्पन्न हुआ। जिनके निर्देशन में पूज्य वात्सल्य रत्नाकर सभागार का निर्माण किया गया। साथ ही ध्यान केन्द्र हेतु रत्नमय चौबीसी की योजना तैयार हुई जिसका पञ्चकल्याणक दिनांक 22 से 27 मई, 2011 को परम पूज्य क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज एवं पूज्य गणिनी आर्यिका 105 स्याद्वादमति माताजी के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। साथ ही आचार्यश्री के निर्देशन में रत्नमयी खड्गासन चौबीसी पद्माशन सहस्रफणी पार्श्वनाथ विराजमान किये गये।

श्री तीर्थ पर इन्द्रमयी मानस्तम्भ का कार्य भी चल रहा है, जो लगभग पूर्णता की ओर है। साथ ही यात्री निवास तथा संत निवास कार्य प्रगति पर चल रहा है।

यहाँ विराजमान 1008 भगवान पार्श्वनाथ की मनोरम 400 वर्ष प्राचीन मूल्यवान प्रतिमा चोरों द्वारा चुरा ली गयी थी; किन्तु चोरों का वाहन दुर्घटनाग्रस्त हुआ और पूज्य प्रतिमाजी पुनः अपने देवालय में विराजमान हो गये। इस घोर पंचमकाल में जिनशासन के चमत्कार का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

विराटनगर का जैन सांस्कृतिक महत्त्व– पौराणिक तीर्थ स्थल होने के साथ-साथ महाभारत कालीन मत्स्य देश की राजधानी विराट नगर जैन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। यहाँ के जैन महाजनों की प्रबन्ध क्षमता का सम्मान राजपूत राजाओं और मुगल शासकों द्वारा समान रूप से होता रहा। परम पूज्यनीय श्री कुन्दकुन्दाचार्य आम्नाय के प्रखर प्रवक्ता पूज्य आचार्य श्री शुभचन्द स्वामी की तपोभूमि और जैन मुनि श्री विमलसूरी जी महाराज की जन्म भूमि है, जिनके उपदेशों से प्रभावित होकर मुगल बादशाह अकबर ने वर्ष में 106 दिन पुण्य तिथियों पर जीव हिंसा पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। सम्राट चन्द्रगुप्त का जन्म यहाँ हुआ।

भव्य जैन मन्दिर– नगर के हृदय स्थल, मुख्य बाजार के केन्द्र में दो भव्य और विशाल प्राचीन दिगम्बर जैन अवस्थित हैं। जिनमें प्राचीन प्रतिमाऐं, विस्तीर्ण चैत्यालय, विशाल प्रांगण, बरामदे, भव्य द्वारा और विशाल सुशोभित हैं। प्राचीरों पर की गयी चित्रकारी अद्भुत और दर्शनीय है।

बाजार से सटा हुआ एक 16वीं शताब्दी में निर्मित विशाल शिखर युक्त जैन श्वेताम्बर मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण दिलवाड़ा शैली में हुआ है। प्राचीरों में उत्कीर्ण पशु-पक्षियों की एवं अन्य आकृतियाँ अद्भुत हैं। औरंगजेब ने इस मंदिर को ध्वस्त करने का प्रयास किया था किन्तु असमर्थ रहा। इस मंदिर के निर्माण में सीमेन्ट व चूने का कहीं प्रयोग नहीं किया गया है।

नगर का महाभारत कालीन महत्त्व– विराट नगर पाण्डवों की शरण स्थली रहा है। नारायण श्रीकृष्ण यहाँ के शासक विराट राजा कमलनयन की सभा में पधारे थे एवं यहाँ से ही उन्होंने प्रथम शान्ति संदेश प्रसारित किया था। अर्जुनपुत्र अभिमन्यु का विवाह उनकी राजकुमारी उत्तरा से हुआ जिनके पुत्र महाराज परीक्षित

की कीर्ति महाभारत में वर्णित है। पाण्डव श्रेष्ठ भीमसेन ने यहाँ कीचक का वध किया। पौराणिक मतानुसार वैदिक काल में भी यह नगर 16 जनपदों में प्रमुख जनपद था, जिसके राजा वपु की पुत्री सत्यवती का विवाह हस्तिनापुर नरेश राजा शान्तनु से हुआ जिनके गर्भ से महाभारत काव्य के रचयिता श्रीकृष्ण द्वैपायन का जन्म हुआ। भीमसेन की पूजास्थली भीमगिरि, भीमलता, बाणगंगा, लघु कुरुक्षेत्र महाभारतकालीन इतिहास के साक्षी हैं।

नगर में बौद्ध संस्कृति– सम्राट अशोक महान ने यहाँ बौद्ध धर्म प्रचारार्थ शिलालेखों स्तूपों आदि का निर्माण करवाया। भीमसेन की डूँगरी का शिलालेख अशोक स्तम्भ व अनेक महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ आज भी यहाँ पर देखी जा सकती हैं। चीनी यात्री फाह्यान ने भी यहाँ का विवरण अपनी पुस्तक में लिखा है। खुदाई के दौरान मिली अनेक वस्तुएँ जिसमें चाँदी के सिक्के, मूर्ति, मिट्टी के बर्तन, सूती कपड़ा, आदिमानव के औजार आज भी यहाँ के पर्यटन विभाग के संग्रहालय में देखे जा सकते हैं एवं बौद्धकालीन सभ्यता के स्मृति चिह्न यहाँ बीजक पहाड़ी पर वर्तमान में मौजूद हैं, जो नगर की अनमोल धरोहर हैं एवं राज्य सरकार द्वारा सुरक्षित हैं।

मुगलकालीन ऐतिहासिक महत्त्व– बादशाह अकबर के जमाने में स्थित मुगल गेट, टकसाल, तांबे की खानें, मुगलकालीन शाही महल, मुगल द्वार की भित्ति चित्रकला आदि देखने योग्य है। मुगलकालीन टकसाल में बैराठ नाम से अंकित सिक्के ढलते थे जिनकी व्यवस्था यहाँ के (चौधरी जैन महाजन) किया करते थे।

सनातन संस्कृति– नगर बावन शक्तिपीठों में से 49वाँ शक्तिपीठ है जो मनसा माता के रूप में नगर के पश्चिम और पहाड़ी पर स्थित है। ये राजा विराट की कुलदेवी के रूप में पूजी जाती हैं। नगर के दक्षिण की ओर गणेश गिरी पर भव्य गणेश जी का मंदिर जिसमें विराजमान भगवान गणेश की विशाल प्राकृतिक मूर्ति बहुत ही चमत्कारी है नगर के उत्तर की ओर स्थित भीमगिरि पर स्थित भीमसेन गुफा, भीमलता एवं पंचखण्ड शिखर पर विराजमान भगवान हनुमान की 165 मण की विशाल मानवाकार मूर्ति दिव्य और चमत्कार पूर्ण है।

इस काल में अलवर, जयपुर मार्ग से विहार करते हुए अनेक मुनिराज, आर्यिका माताओं के साथ-साथ परम पूज्य आचार्य श्री 108 देशभूषणजी महाराज,

आचार्य श्री 108 सन्मतिसागरजी महाराज, आचार्य श्री 108 निर्मलसागरजी महाराज, आचार्य श्री 108 पार्श्वकीर्तिजी महाराज, आचार्य श्री 108 कल्याणसागरजी महाराज, आचार्य श्री 108 भरतसागरजी महाराज, आचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज, बालाचार्य श्री 108 योगीन्द्रसागरजी महाराज, आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज, मुनि श्री 108 आनन्दसागरजी महाराज, मुनि श्री 108 सुधासागरजी महाराज, उपाध्याय श्री 108 ज्ञानसागरजी महाराज, मुनि श्री 108 तरुणसागरजी महाराज आदि आचार्यों मुनिजनों की चरण रज से यह नगर पवित्र होता रहा है।

पूज्य आचार्यों मुनिराजों की प्रेरणा से तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ महासभा तीर्थ संरक्षिणी महासभा के प्रयासों द्वारा इस अत्यन्त महत्त्वशाली प्राचीन नगर में स्थित दिगम्बर जैन नशियाँ जीर्णोद्धार किया गया है एवं भावी विकास हेतु एक विस्तृत योजना तैयार की गयी है जो आपके सामने है।

नशियाँ विकास के लिए तैयार विकास कार्य की भावी योजनाएँ–

*	पूज्य भट्टारकों के चरण–चिह्न सहित बनी विशाल सात छतरियों का जीर्णोद्धार	5,00,000/–
*	बावड़ी की मरम्मत पुरातत्व की रक्षा करते हुए	1,25,000/–
*	मुख्य राजसी प्रवेशद्वार नसियाँजी का जीर्णोद्धार	5,00,000/–
*	भोजनालय	10,00,000/–
*	सभा भवन	10,00,000/–
*	यात्री निवास	10,00,000/–
*	भगवान बाहूबली व पहाड़	10,00,000/–
*	25 कमरे डीलक्स (प्रति कमरा)	1,25,000/–
*	स्थायी पूजन कोष (प्रति वर्ष – 1 दिन पूजन)	501/–
*	स्थायी आरती कोष	351/–

***

सिद्ध स्तवन

सोरठा– **तीर्थ क्षेत्र निर्वाण, मंगलमय मंगल परम।**
करते हम गुणगान, मुक्त हुए जिन सिद्ध का।।

जीवादि तत्त्वों का जिसने, समीचीन श्रद्धान किया।
सम्यक् ज्ञान आचरण पाकर, निज आतम का ध्यान किया।।
संवर और निर्जरा करके, अष्ट कर्म का नाश किया।
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।1।।

करके योग निरोध अपने, कर्मों का कीन्हा संहार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, आतम का कीन्हा उद्धार।।
किए कर्म का नाश जहाँ वह, बना तीर्थ अतिशय पावन।
कहलाए निर्वाण क्षेत्र वह, सर्व लोक में मन भावन।।2।।

संत साधना से तीर्थों का, कण–कण पावन हुआ अहा।
पार हुआ भव सागर से वह, अतः क्षेत्र वह तीर्थ कहा।।
तीर्थ क्षेत्र की रज को प्राणी, अपने शीश चढ़ाते हैं।
श्रद्धा सहित वन्दना करके, अनुपम जो फल पाते हैं।।3।।

तीर्थ क्षेत्र का वन्दन करके, तीर्थ रूप हम हो जावें।
कर्माश्रव हो नाश हमारा, भव वन में न भटकावें।।
संत और भगवन्तों के हम, पथगामी बन जाएँ अहा।
उनके गुण पा जाएँ हम भी, अन्तिम यह उद्देश्य रहा।।4।।

संत साधना करके अपने, करते हैं कर्मों का नाश।
रत्नत्रय के द्वारा करते, निज आतम का पूर्ण विकाश।।
मोक्ष महाफल विशद प्राप्त कर, बन जाते हैं अनुपम सिद्ध।
शाश्वत सुख पाने वाले वह, हो जाते हैं जगत प्रसिद्ध।।5।।

विराट नगर पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना

श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, जग में पाप प्रणाशनहारी।
पार्श्वनाथ जिन के गुण गाऊँ, चरणों में नित शीश झुकाऊँ।।
विराट नगर की नसिया पावन, भवि जीवों की है मन भावन।
पावन तीर्थ कहा सुखदायी, दर्शन मंगलमय है भाई।।
आसन हृदय कमल का पाएँ, उस पर श्रीजी को बैठाएँ।
आह्वानन का भाव बनाया, श्री चरणों में शीश झुकाया।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

इन्द्रिय के विषयों की आशा, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हे नाथ ! अतीन्द्रिय सुख पाने, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोगों में फंसे रहे हम, मुक्त नहीं हो पाए हैं।
भव आतप से मुक्ति पाने, चन्दन घिसकर लाए हैं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके तीनों ही लोकों में, पर निजपद प्राप्त न कर पाए।
अब अक्षय पद पाने हेतू, यह अक्षय अक्षत हम लाए।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ित हो काम व्यथा से कई, हम जन्म गंवाते आए हैं।
हो काम वासना नाश प्रभो !, हम पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

करता है व्याकुल क्षुधा रोग, हम उससे अति दुःख पाए हैं।
हम क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोहकर्म, हम उसके नाथ सताए हैं।
अब नाश हेतु इस शत्रु के, यह दीप जलाने लाए हैं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म के बन्धन में, बंधकर जग में भटकाए हैं।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप जलाने लाए हैं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल हैं कितने सारे जग में, गिनती भी न कर पाए हैं।
वह त्याग मोक्ष फल पाने को, यह फल अर्पण को लाए हैं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार वास दुःखकारी है, हम इससे अब घबड़ाए हैं।
पाने अनर्घ पद नाथ परम, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान हैं, मंगलमयी त्रिकाल।
विराट नगर जिन तीर्थ की, गाते हैं जयमाल।।

(चौपाई)

पावन मध्य लोक मनहारी, जिसकी महिमा विस्मयकारी।
मध्य सुमेरु जिसके जानो, लख योजन ऊँचा पहिचानो।
भरत क्षेत्र दक्षिण में गाया, दण्डाकार रूप बतलाया।
भारत देश है महिमाशाली, आर्य सभ्यता कही निराली।।
राजस्थान प्रान्त है भाई, रजधानी जयपुर बतलाई।
विराट नगर है महिमा शाली, फैली चतुर्दिशा हरियाली।।
ऐतिहासिक नगरी तुम जानो, मुगल काल की जो पहिचानो।
पाँचों पाण्डव वहाँ पे आए, रहकर आज्ञातवास बिताए।।
नसियां बनी है बहुत पुरानी, मनहर सबकी जानी मानी।
पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्यारी, मंगलमय है अतिशयकारी।।
दुःखियों के दुःख हरने वाली, अतिशय मंगल करने वाली।।
जीर्णोद्धार हुआ है भारी, महासभा की है बलिहारी।
चार वेदियाँ भी बनवाईं, श्याम वर्ण की प्रतिमा आईं।।
पार्श्वनाथ भगवान बनाए, चौबीसी भी साथ में लाए।
पाण्डव की प्रतिमाएँ आईं, सवा पाँच फुट है ऊँचाई।।
हुआ पञ्चकल्याणक भाई, चतुर्दिशा से जनता आई।
आचार्य विशद सिन्धु जी आए, विशाल सागर को संग में लाए।।
दो हजार सन् सात बताया, जनवरी का महिना शुभ आया।
छब्बिस से इक्तिस तक जानों, पञ्चकल्याणक का अवसर मानो।।

हुआ महोत्सव विस्यमयकारी, क्षेत्र बना है बहु मनहारी।
रत्नमयी जिनबिम्ब बुलाए, पञ्चकल्याणक फिर करवाए।
बाईस से सत्ताइस मानो, मई सन् बीस सौ ग्यारह मानो।।
आर्यिका स्याद्वादमतिजी आईं, गणिनी पद से भूषित गाईं।
वर्षायोग यहाँ पर कीन्हा, सान्निध्य पञ्चकल्याण में दीन्हा।।
अपना यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार हम दर्शन पाएँ।।
अन्तिम यही भावना जागी, यही लगन अन्तर में लागी।

दोहा– दर्शन कर प्रभु पार्श्व के, हृदय जगे श्रद्धान।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित विघ्न विनाशक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पूजा कर जिन पार्श्व की, कर्म होय उपशांत।
सुख शांति वैभव बढ़े, मोक्ष मिले उपरान्त।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

आरती श्री पार्श्वनाथ भगवान

हम तो आरती उतारें जी, पार्श्वनाथ स्वामी की।
जय-जय-जय पार्श्व प्रभु, जय-जय-जय।।
श्री अश्वसेन के लाल कहाए, वामादेवी माता गाए।
लिया काशी नगर अवतार-पार्श्वनाथ... ।।1।।
सैर हेतु प्रभु वन में आए, तपसी आग में नाग जलाए।
दिया मंत्र नवकार- पार्श्वनाथ... ।।2।।
प्रभु के मन वैराग्य समाया, संयम ले मुनिव्रत अपनाया।
वन को किया विहार, पार्श्वनाथ... ।।3।।
कर बिहार अहि क्षेत्र में आए, निज आतम का ध्यान लगाए।
किया आत्म उद्धार, पार्श्वनाथ... ।।4।।
कमठ वहाँ पर आया भाई, पत्थर अग्नि धूल गिराई।
किया उपद्रव घोर, पार्श्वनाथ... ।।5।।

विराटनगर शुभ तीर्थ कहाया, विघ्न विनाशक जिसको गाया।
हुए कई चमत्कार, पार्श्वनाथ... ।।6।।
पाण्डव पाँचों यहाँ पे आये, अपना अज्ञात वास बिताए।
ब्राह्मण भेष को धार, पार्श्वनाथ... ।।7।।
विशद सिन्धु गुरुवरजी आए, पञ्चकल्याणक यहाँ करवाए।
आकर के अपरम्पार, पार्श्वनाथ... ।।8।।

***

आरती

(तर्ज – भक्ति बेकरार है....)

पार्श्वनाथ दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
भव्य जीव जिन पूजा करके, होता भव से पार है।।1।।
अश्वसेन वामा माता के, अनुपम राज दुलारे जी–2
युवा अवस्था में गृह त्यागे, मुनिवर दीक्षा धारे जी।।2।। पार्श्वनाथ दरबार है..
सरिता के तट पर आकर के, प्रभुजी ध्यान लगाए थे।
बैर–विचार कमठ ने आकर, बहु पत्थर बरसाये थे।।3।। पार्श्वनाथ दरबार है...
समताधार प्रभु ने अनुपम, केवलज्ञान जगाया था–2
नत होकर के शत इन्द्रों ने, समवशरण बनवाया था।।4।। पार्श्वनाथ दरबार है...
ॐकारमय दिव्य देशना, जग को श्रेष्ठ सुनाए थे–2
प्राणी श्रद्धा ज्ञान आचरण, प्रभु पद में कई पाए थे।।5।। पार्श्वनाथ दरबार है...
गिरि सम्मेद शिखर पर जाकर, सारे कर्म विनाश किए–2
यह संसार वास तजकर के, सिद्धशिला पर वास किए।।6।। पार्श्वनाथ दरबार है...
विन्ध्यावली तीर्थ चंवलेश्वर, नागफणी कई क्षेत्र रहे।
चूलगिरिजी और अणिंदा, विराट नगर शुभ तीर्थ कहे।।7।। पार्श्वनाथ दरबार है...
मक्सी पार्श्वनाथ बीजापुर में, अतिशय दिखलाए जी–2
विशद आरती पूजा करके, प्राणी पुण्य कमाए जी।।8।। पार्श्वनाथ दरबार है...

***

भजन

(तर्ज – तुमसे लागी लगन...)

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण, पारस प्यारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।
कृपा हम पर करो, कष्ट सारे हरो, जिन हमारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
काशी नगरी में जन्म लिया है, वामादेवी को धन्य किया।
अश्वसेन कुँवर, धरी वन की डगर, संयम वारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
तुमने छोड़ा है धनधाम सारा, छोड़ जग में सभी का सहारा।
तपसी से यह कहा, क्यों जलाते अहा, नाग कारें।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
मंत्र नागों को प्रभु ने सुनाया, जन्म स्वर्गों में जीवों ने पाया।
किये उपकार जिन, पार्श्व जी स्वार्थ बिन, प्रभु हमारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
प्रभु पारस ने ध्यान लगाया, कमठ पापी ने उपसर्ग ढाया।
धरणेन्द्र पद्मावती, आए नागपति, सुर विचारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
फण को पद्मावती ने फैलाया, प्रभु पारस को ऊपर बैठाया।
धरणेन्द्र आया वहाँ, फण का छत्र बना, उपसर्ग टारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
केवलज्ञान प्रभु ने जगाया, 'विशद' जीवों ने उपदेश पाया।
गये सम्मेदगिरि, पाये मुक्तिश्री, जिन हमारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

***

मुझे प्रभु पार्श्व की भक्ति का अवसर आज मिल जाए।
बुझा मम ज्ञान का दीपक, श्रेष्ठतम आज जल जाए।।
भटकते आये हैं हम, अनादि मोह मिथ्या में।
विशद श्रद्धान का अब पुष्प, हृदय में आज खिल जाए।।

पार्श्वनाथ चालीसा (विराट नगर)

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
विघ्न विनाशक तीर्थ शुभ, जग में रहा प्रधान।।
अतिशयकारी जो रहा, विराट नगर है नाम।
पार्श्व प्रभु के चरण में, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जग में पारसनाथ निराले, भव्यों के दुःख हरने वाले।
महिमा सारा जग यह गाता, पद में सादर शीश झुकाता।।
पूर्व भवों में कर्म सताए, समता धर वह सभी नशाए।
नो भव पूर्व की बात बताते, जैनागम में ऐसा गाते।।
राजा श्री अरविन्द कहाए, पोदनपुर के स्वामी गाए।
मंत्री विश्वभूति कहलाए, पुत्र कमठ मरुभूति पाए।।
अत्याचार कमठ जब कीन्हा, राजा देश निकाला दीन्हा।
भूताचल पर्वत पर आया, तपसी का वह रूप बनाया।।
खड्गासन में शिला उठाई, कुतप घोर वह कीन्हा भाई।
समझाने की मन में आई, मरुभूति पर शिला गिराई।।
मरुभूति गज योनी पाया, कमठ नाग योनी उपजाया।
अणुव्रतों को गज ने धारा, नाग ने डसकर उसको मारा।।
स्वर्ग लोग में गज उपजाया, नाग नरक के दुःख को पाया।
स्वर्ग से चयकर नरगति आए, अग्निवेग मुनि पदवी पाए।।
कमठ नरक गति से जब आया, अजगर बनके मुनि को खाया।
मुनिवर अच्युत स्वर्ग सिधाए, नरकों के दुःख अजगर पाए।।
स्वर्ग से चय चक्रीपद पाए, दीक्षा धर के ध्यान लगाए।
भील बना नरकों से आया, उसने मुनि को मार गिराया।।
मुनि ने पद अहमिन्द्र का पाया, भील पुनः नरकों उपजाया।
स्वर्ग से चयकर नरगति आए, हो विरक्त मुनि दीक्षा पाए।।
नारक सिंह पर्याय में आया, उसने फिर मुनिवर को खाया।
आनत स्वर्ग मुनि उपजाए, सिंह नरक गति फिर से पाए।।
तापस बना नारकी प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
आनत से जब चयकर आए, काशी नगरी धन्य बनाए।।
अश्वसेन के पुत्र कहाए, वामासुत पारस कहलाए।

कुतप धरा नाना ने भाई, लकड़ी ले पञ्चाग्नि जलाई।।
पार्श्व कुँवर वन को जब आए, तापस से यह बात सुनाए।
तापस कुतप धारने वाले, नाग जलें लकड़ी में काले।।
लकड़ी तापस फाड़ गिराई, निकले नाग जले तब भाई।
णमोकार प्रभु मंत्र सुनाए, नाग देव गति में उपजाए।।
पार्श्व कुँवर मुनिदीक्षा धारे, पञ्चमुष्ठि से केश उखाड़े।
कर विहार विंध्यावलि आये, रेवातट पर ध्यान लगाए।।
जीव कमठ का संवर आया, प्रभु को देख वैर मन आया।
पत्थर धूलि आदि बरसाई, महाभयंकर बिजली गिराई।।
धरणेन्द्र पद्मावति तब आए, शीश पे रखकर क्षत्र लगाए।
कमठ हारकर चरणों आया, उसने भी श्रद्धान जगाया।।
शिला लेख में ऐसा गाया, लोगों ने हमको बतलाया।
गिरि सम्मेद शिखर से भाई, पार्श्व प्रभु ने मुक्ति पाई।।
शहर गुलाबी शुभ कहलाया, जयपुर जिला श्रेष्ठ शुभ गाया।
विराट नगर है जिसमें भाई, जग में फैली है प्रभुताई।।
पाँचों पाण्डव वहाँ पे आये, अपना अज्ञात वास बिताए।
मुगल काल की रचना जानो, नसिया बनी श्रेष्ठ शुभ मानो।।
विघ्न विनाशक तीर्थ कहाया, मंगलमय मनहारी गाया।
आचार्य शुभचन्द स्वामी गाए, जन्म इसी भूमि पर पाए।।
चन्द्रगुप्त राजा शुभ जानो, जन्म नगर उनका पहिचानो।
पार्श्वनाथ सोहें मनहारी, जो हैं भारी अतिशयकारी।।
बनी छतरियाँ हैं मनहारी, चरण बने जिनमें शुभकारी।
भट्टारक की गद्दी जानो, आगम परम्परा पहिचानो।।
गाँव का मंदिर है मनहारी, महावीर की प्रतिमा प्यारी।
छोटा मंदिर भी शुभकारी, आदिनाथ हैं मंगलकारी।।
तीर्थ पार्श्व के अतिशयकारी, चंवलेश्वर जानो शुभकारी।
अंतरिक्ष अहिक्षत्र बताए, नागफणी मक्सी जी गाए।।
नैनागिरी अणिन्दा जानो, चूलगिरि गोपाचल मानो।
जिन्तूर अरु बीजापुर भाई, बड़ागाँव तीरथ सुखदायी।।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
चरण झुकाएँ माथ, पढ़े-सुने शांति मिले।।

पाण्डव पूजा

स्थापना

पाण्डव पाँच युधिष्ठिर आदि, हरिवंश में हुए महान।
मुनिव्रतों को धारण करने वाले, जग में हुए प्रधान।।
पूज्य युधिष्ठिर भीमार्जुन ने, प्रगटाया शुभ केवलज्ञान।
नकुल और सहदेव मुनि सब, का हम करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से कर्मों का, घन घात सहन करते आए।
जन्मादि जरा का रोग नाश, हम नहीं आज तक कर पाए।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में घूम-घूम, हमने संसार बढ़ाया है।
संताप सहा हमने भाई, भव ताप नहीं नश पाया है।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत विक्षत हुए हम भव-भव में, न शांति मन में ला पाए।
अब अक्षत पद पाने हेतु यह, अक्षत धवल यहाँ लाए।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों से योगों में हल चल, पाकर चंचल होते आए।
अब योग रोध कर काम नाश, के हेतु पुष्प यह शुभ लाए।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा व्याधि है दुखदायी, इससे हम बहुत सताए हैं।
नैवेद्य बनाकर आज यहाँ, वह रोग नशाने आए हैं।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह महामद पीकर के, मतवाले होते आये हैं।
उस मोह अंध के नाश हेतु, यह जगमग दीप जलाए हैं।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु कर्म बड़े बलवान कहे, चेतन को दास बनाए हैं।
कर्मों को दास बनाएँ हम, यह धूप जलाने लाए हैं।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की आकांक्षा में पल-पल, कई जन्म गँवाते आये हैं।
पाने मुक्ति फल अब अनुपम, यह सरस श्रेष्ठ फल लाए हैं।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

न साथ निभाए तन मन धन, फिर भी हम राग लगाए हैं।
अब वीतराग पद पाने को, यह अर्घ चढ़ाने लाए हैं।।
अब मोक्ष मार्ग पर बढ़ने का, हम भाव बनाकर आए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य नाथ !, शुभ पूजा करने लाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– घोर सहन कीन्हें अति, पाण्डव कई उपसर्ग।
जयमाला गाते यहाँ, पाने स्वर्गापवर्ग ।।

(शम्भू छन्द) आल्हासग

भरत क्षेत्र के आर्य खण्ड में, भारत देश रहा शुभकार।
नगर हस्तिनापुर के राजा, पाण्डव राज थे अपरम्पार।।
पाँच पुत्र थे जिनके अनुपम, नीति कुशल ज्ञानी गुणवान।
धर्म धुरन्धर श्रद्धालु शुभ, सच्चारित्री महिमावान।।
प्रथम युधिष्ठिर ज्ञानवान शुभ, न्याय नीति धारी विद्वान।
द्वितीय पुत्र भीम योद्धा थे, श्रेष्ठ शक्तिधारी गुणवान।।
अर्जुन श्रेष्ठ धनुर्धर गाये, जिसकी महिमा का न पार।
नकुल और सहदेव भ्रात द्वय, धर्मालु थे अपरम्पार।।
कौरव हुए चचेरे भाई, द्यूत क्रीड़ा की उनके साथ.
सती द्रोपदी को हारे तब, सौपी दुर्योधन के हाथ।।
चीर हरण तब सती द्रोपदी का, करवाया सभा मंझार।
चीर हरण करते करते तब, दुःशासन ने मानी हार।।
पंच पाण्डवों को तव कीन्हा, कौरव ने जा अज्ञात वास।
विराट नगर आये तव पाण्डव, वहाँ प्राप्त कीन्हें अवकाश।।
नगर हस्तिनापुर को जीता, कौरव पक्ष से ले संग्राम।
महा भयंकर युद्ध हुआ था, महाभारत है जिसका नाम।।
नगर हस्तिनापुर का पाया, विजय प्राप्त करके साम्राज्य।
न्याय नीति के साथ चलाया, पांच पाण्डवों में शुभ राज।।
नेमिनाथ के समवशरण में पाँचों, पाण्डव गये प्रधान।
यह संसार असार जानकर, दीक्षा धारण किए महान।।
पाँचों पाण्डव किए तपस्या, इस जग से होकर अविकार।
आत्म ध्यान में लीन हुए मुनि, किए स्वयं आतम उद्धार।।
दुर्योधन का भान्जा आया, कुर्मुधर था जिसका नाम।
मुनियों को देखा जब उसने, किया बड़ा ही खोटा काम।।

गरम–गरम आभूषण करके, लोहे के पहनाए आन।
सहन किए उपसर्ग मुनीश्वर, समता धरके कीन्हें ध्यान।।
मुनि युधिष्ठिर भीमार्जुन ने, प्रगटाया शुभ केवल ज्ञान।
नकुल और सहदेव मुनीश्वर, सर्वार्थसिद्धि किए प्रयाण।।
विशद ज्ञान को पाएँ हम भी, तीन लोक में अपरम्पार।
जिन मुनि के चरणों में वन्दन, करते हैं हम बारम्बार।।

दोहा– संयम धारण कर हुए, वीतराग निर्ग्रन्थ।
भाव सहित वन्दन विशद, पावें मुक्ति पथ।।

ॐ ह्रीं विराट नगर स्थित श्री पाण्डव जिन मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मुक्ति पथ पर बढ़ गये, पाँचों पाण्डवराज।
वन्दन उनके चरण में, करता सकल समाज।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

***

पाण्डव की आरती

आनंद अपार है भक्ति का प्रसार है।
पाँचों पाण्डव की आरती कर, होती जय–जयकार है।।
मंगल आरती लेकर स्वामी, आये तुमरे द्वार जी–2
भाव सहित हम गुण गाते हैं, पाने भवदधि पार जी–2 ।। आनन्द....।।
भक्त सभी मिलकर के नाचें, आज तुम्हारे द्वार जी–2
मुनि युधिष्ठिर भीमार्जुन की, बोलें जय जयकार जी–2 ।। आनन्द....।।
नकुल और सहदेव मुनि के, आज चरण को पाया जी–2
तुम हो मुक्ति पथ के राही, आप शरण में आया जी–2 ।। आनन्द....।।
नैया पार लगादो मेरी, चरण शरण शिरनाया जी–2
अजर–अमर पद पाने हेतु, सुगुण आपका गाया जी–2 ।। आनन्द....।।
शरण आपकी जो भी आते, मन वांछित फल पाते हैं–2
विशद मोक्ष फल पाने हम भी, सादर शीश झुकाते हैं–2 ।। आनन्द....।।
पाँचों पाण्डव के गुण गाते, पञ्चम गति शुभ पाने को–2
विशद भाव से भक्ति करते, अपने कर्म नशाने को–2 ।। आनन्द....।।

श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन

(स्थापना)

वर्तमान की भरत क्षेत्र में, चौबीसी है सर्व महान्।
वृषभादि महावीर प्रभु का, करते भाव सहित गुणगान।।
भक्ति भाव से नमस्कार कर, विनय सहित करते पूजन।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो मम्, करते हैं हम आह्वानन्।।
जिस पथ पर चलकर के भगवन्, तुमने स्व पद पाया है।
उस पथ पर बढ़ने का पावन, हमने लक्ष्य बनाया है।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

पाप कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुःख पाते हैं।
पाकर जन्म मरण भव-भव में, तीन लोक भटकाते हैं।।
जन्म जरा के नाश हेतु प्रभु, निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

पुण्य कर्म के प्रबल योग से, जग का वैभव पाते हैं।
भोग पूर्ण न होने से हम, मन में बहु अकुलाते हैं।।
संसार वास के नाश हेतु, सुरभित यह गंध चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है जीव तत्त्व अक्षय अखण्ड, हम उसे जान न पाते हैं।
फसकर मिथ्यात्व कषायों में, हम चतुर्गति भटकाते हैं।।

अक्षय अखण्ड पद पाने को, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं भिन्न तत्त्व हमसे अजीव, वह जग में भ्रमण कराते हैं।
सहयोगी बनकर विषयों में, वह लालच दे बहलाते हैं।।
हो कामवासना नाश प्रभु, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव के कारण से प्राणी, इस जग में नाच नचाते हैं।
जो क्षुधा व्याधि से हो व्याकुल, मन में अतिशय अकुलाते हैं।।
हम क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर नीर सम बंध तत्त्व ने, आतम में बंधन डाला।
सहस्र रश्मिवत् पूर्ण प्रकाशित, चेतन को कीन्हा काला।।
बंध तत्त्व के नाश हेतु हम, घृत का दीप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति समिति व्रताभाव में, संवर कभी न कर पाए।
कर्मों ने भटकाया जग में, उनसे छूट नहीं पाए।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, सुरभित धूप जलाते है।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा न कर पाए, सम्यक् तप से हीन रहे।
जग भोगों के फल पाने में, हमने अगणित कष्ट सहे।।

मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुःख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतु, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जल चंदन अक्षत सुमन, चरु ले दीप प्रजाल।
फल पाने अतिशय विशद, गाते हम जयमाल।।

ऋषभ चिन्ह लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करूँ नमन्।
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन।।

अश्व चिन्ह संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।
मर्कट चिन्ह चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन।।

सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिवंदन।
पद्म चिन्ह है पद्मप्रभु पद, लेकर पद्म करूँ अर्चन।।

स्वस्तिक चिन्ह सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करूँ भजन।
चन्द्र चिन्ह चंदा प्रभ वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन।।

मगर चिन्ह श्री सुविधि नाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम।।

गेंडा चिन्ह चरण में लख के, श्रेयांस नाथ को करूँ नमन्।
भैंसा चिन्ह श्री वासुपूज्य पद, देख करूँ शत्-शत् वंदन।।

विमलनाथ का चिन्ह है सूकर, विमल रहे मेरे भगवन्।
सेही चिन्ह है अनंतनाथ पद, उनको सादर करूँ नमन्।।

वज्र चिन्ह प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करूँ हो धर्म गमन।
शांतिनाथ का हिरण चिन्ह शुभ, शांति दो मेरे भगवन्।।

कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाऊँ मैं सम्यक् दर्शन।
अरहनाथ का चिन्ह मीन है, वीतराग जिन को वन्दन।।

कलश चिन्ह लख मल्लिनाथ को, बंदू पाऊँ ज्ञान सघन।
कछुवा चिन्ह मुनिसुव्रत जिन का, वन्दन कर हो जाऊँ मगन।।

चरण पखारूँ नमिनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।
शंख चिन्ह पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन।।

चिन्ह सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करूँ चरण वंदन।
वर्धमान पद सिंह देखकर, करूँ चरण का अभिनंदन।।

वृषभादि महावीर प्रभु की, करूँ नित्य सविनय पूजन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, चरणों में शत्-शत् वंदन।।

दोहा – चौबीसों जिनराज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर विशद, शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगलपरम।
मंगल करें सदैव, सुख शांति आनन्द हो।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

माथे में सबके किस्मत की लकीर होती है।
शुभाशुभ पाना अपनी-अपनी तकदीर होती है।।
उनका जीवन मंगलमय हो जाता है प्यारे भाई।
पार्श्व प्रभु की जिनके हृदय में तस्वीर होती है।।

नवदेवताओं की आरती

(तर्ज–इह विधि मंगल....)

नव कोटि से आरती कीजे, नव देवों की शरण गहीजे।

प्रथम आरती अर्हत्धारी, कर्म घातिया नाशनकारी। नवकोटि....

द्वितीय आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता। नवकोटि....

तृतीय आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की। नवकोटि....

चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की। नवकोटि....

पाँचवीं आरती मुनिसंघ की, बाह्याभ्यंतर रहित संग की। नवकोटि....

छठवीं आरती जैन धरम की, 'विशद' अहिंसा मई परम की। नवकोटि....

सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की। नवकोटि....

आठवीं आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों की मंगलकारी। नवकोटि....

नौवी आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की। नवकोटि....

आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशीष लीजे। नवकोटि....

चौबीस जिन की आरती

(तर्ज – मांई रि मांई ...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।
ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती ...

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती ...

श्रेय नाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु कहलाए, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती ...

शांति कन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन–तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोहे मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती ...

मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती ...

***

बिन मांगे ही यहाँ पर भरपूर मिलता है,
आशाओं से अधिक जी हुजूर मिलता है।
दुनियाँ में और कहीं मिले न मिले बन्धु,
पर पार्श्व प्रभु के दर पर जरूर मिलता है।।

अपनी भावना

विघ्नौघा प्रलयं यांति शाकिनी भूत पन्नगा।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनश्वरे।।

भगवान जिनेन्द्र देव की पूजा स्तुति करने से संसार की समस्त विघ्न, बाधायें मिट जाती हैं। यहाँ तक कि शाकिनी, डाकिनी, भूत-प्रेत आदि ऊपरी बाधायें भी शांत हो जाती हैं और विष भी अमृत बन जाता है।

जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति से जिनधर्म की प्रभावना का परचम सदैव ऊँचा रहा है। सीता की भक्ति से अग्नि का नीर, सोमा की भक्ति से नाग का हार जैसे कई दृष्टांत है। आचार्यश्री मानतुंग स्वामी ने 'भक्तामर स्तोत्र' की रचना कर श्री समंतभद्र स्वामी ने 'स्वयंभू स्तोत्र' की रचना कर, आचार्यश्री वादिराज स्वामी ने 'एकीभाव स्तोत्र', कुमुदचन्द्राचार्यजी ने 'कल्याण मंदिर स्तोत्र' की रचना से भक्ति का मार्ग मुखरित हुआ है।

आदि-ब्रह्मा, आदि-तीर्थंकर, धर्मप्रवर्तक, भगवान आदिनाथ स्वामी की भक्ति, सर्वसौख्य-शांति व शास्वतपद-प्रदाता है। समयानुकूल भक्ति-रस की पावन धारा में परम **पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज** ने अनेक विधान-पूजन रचनाओं के साथ प्रस्तुत **'आदिनाथ विधान'** की रचना करके हम सभी भव्यजनों को उपकृत किया है। आचार्यश्री अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी संत हैं। धर्म की प्रभावना और धार्मिक जनों की कल्याण भावना से ही आचार्यश्री की लेखनी से अनेक विधानों की रचना प्रस्फुटित हुई है। इस विधान में ऋद्धि मंत्रों के समायोजन से यह कृति अपने आप में महत्त्वपूर्ण बन गयी है। श्रद्धालु भक्तजन इस विधान को विधिपूर्वक आयोजित करके इच्छित फल की प्राप्ति कर सकते हैं। पूजन भक्ति से परिणामों में शुद्धता आती है। अशुभ कर्मों का क्षय होता है और शुभ कर्मों के बंध से परिणामों में उज्ज्वलता आना सहज है। भगवान आदिनाथ के चरणों में प्रार्थना है कि आचार्यश्री की लेखनी इसी प्रकार कल्याणकारी बनती रहे। आचार्यश्री रत्नत्रय की प्रबल साधना से लक्ष्य को प्राप्त करें-ऐसी विनम्र भावना।

अन्त में परम पूज्य क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर, पंचकल्याणक प्रभावक, 108 श्री विशदसागरजी महाराज के चरणों में शत-शत नमन, वंदन, त्रि-नमोस्तु।

चरण रज

प्रतिष्ठाचार्य : पं. विमलकुमार जैन (बनेठा)
5/216, मालवीय नगर, जयपुर ● मो. 9829195197

- **श्री वीरेन्द्रकुमार जैन मारवाड़ा**
- **श्री सुन्दरलालजी गणेशलालजी जूनियाँवाले**
- **श्री सुनीलकुमारजी बास्टावाले**
- **श्री बिरधीचंदजी जैन जूनियाँवाले**
- **श्री ताराचंदजी महावीरप्रसादजी बड़ला वाले**
- **श्री रतनलालजी जैन जेतगढ़वाले**
- **श्री महावीरप्रसादजी जैन सदारी वाले**
- **श्री भंवरलालजी टीकमचन्दजी जैन बास्टावाले**
- **श्री कैलाशचन्दजी जैन बास्टावाले**
- **श्री मदनलालजी जैन डाबरवाले**
- **श्री रामप्रसादजी जैन मेहरुवाले**
- **श्री चाँदमलजी जैन मावावाले**
- **श्री अमरचन्दजी जैन जूनियाँवाले**
- **श्री महावीरप्रसादजी जैन दलवासा वाले**
- **श्री चाँदमलजी जैन महरुवाले (मसाला वाले)**